# बढ़ाना होगा सार्वजनिक शिक्षा पर भरोसा

**गीतिका जोशी ताड़ीखेत, अल्मोड़ा की खंड शिक्षा अधिकारी हैं। गुणवत्तापरक शिक्षा को लेकर उनका सकारात्मक रुख, उनके प्रयास स्कूलों में देखे जा सकते हैं। उनके इसी नज़रिये और आगे की योजनाओं के मद्देनजर अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन के पूरन जोशी ने उनसे बातचीत की।**

**सवाल : आज की सार्वजनिक शिक्षा व्यवस्था को लेकर आप क्या सोचती हैं?**

**जवाब :** अगर समाज में गरीब से गरीब वर्ग को शिक्षा देनी है तो उसकी जिम्मेदारी सार्वजानिक शिक्षा की ही है। भारत का वास्तविक विकास तभी है जब सबसे पीछे खड़े व्यक्ति तक शिक्षा पहुंचे। सार्वजनिक शिक्षा का यही लक्ष्य है। गांधी जी का भी यही सपना था कि क़तार के अंतिम व्यक्ति तक संसाधनों की पहुंच हो। हैव्स और हैव्स नॉट के बीच का फर्क सार्वजनिक शिक्षा ही मिटा सकती है।

**सवाल : शिक्षकों की क्षमता संवर्द्धन को आप किस तरह देखती हैं? क्षमता संवर्द्धन के जो मौजूदा कार्यक्रम चल रहे हैं उनसे क्या आप संतुष्ट हैं या उन्हें और बेहतर करने को लेकर कोई आपके ज़ेहन में योजना है?**

**जवाब :** शिक्षकों का क्षमता संवर्धन बहुत जरूरी है। शिक्षक ही नहीं प्रत्येक व्यक्ति को अपने क्षेत्र में अपना क्षमता संवर्धन करते रहना चाहिए जिससे वह और अच्छा काम कर सके। फिर जब बात शिक्षकों की आती है तो ये ज्यादा जरूरी लगता है। पूरा समाज शिक्षकों पर निर्भर है। बदलते समय में उनको कुछ अलग तरह की क्षमताओं की जरूरत है। वैश्वीकरण के इस दौर में जबकि हम विश्व के नागरिक हैं हमको अपनी क्षमताएं बढ़ानी ही होंगी। जिन बच्चों के साथ हम काम कर रहे हैं उनके लिए शिक्षकों के पास विशेष तरीके तो होने ही चाहिए। कई सारे लर्नर प्रथम पीढ़ी के हैं उनके साथ ज्यादा मेहनत हमको करनी है। जो कार्यक्रम चल रहे हैं उनको और बेहतर करने की जरूरत तो हमेशा लगती है। मेरा मानना है कि जिस तरह सरकारी विद्यालयों में बच्चों की संख्या दिनों–दिन कम हो रही है, विद्यालयों में दो से ज्यादा शिक्षक नहीं हो सकते तो शिक्षकों के लिए मल्टीग्रेड टीचिंग पर ज्यादा काम करने की जरूरत लगती है। शिक्षकों के साथ ई–लर्निंग पर काम करने की जरूरत मुझे लगती है।

**सवाल : शिक्षा के क्षेत्र में आप किस तरह की चुनौतियों को देखती हैं?**

**जवाब :** सबसे पहले चुनौती के रूप में जो बात आती है वह है बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा जो हर बच्चे का बुनियादी हक है कैसे मिले। ऐसी शिक्षा जो एक व्यक्ति को अच्छा नागरिक बना सके और साथ ही साथ आर्थिक रूप से वह सशक्त हो पाए। गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा हर एक बच्चे का बुनियादी हक़ है। एक बड़ी चुनौती और जो लगती है वह है लोगों का सार्वजनिक शिक्षा के प्रति रुझान कम होना। मैं हमेशा सोचती रहती हूं कैसे सार्वजानिक शिक्षा के प्रति लोगों के मन में भरोसा लाया जाये।

**सवाल : वो कौन से उम्मीद के कारण हैं जिनके चलते आने वाले समय में शिक्षा को बेहतर रूप में देखा जा सकता हो?**

**जवाब :** ऐसे कई कारण हैं जिनके चलते आने वाले समय में शिक्षा को बेहतर रूप में देखा जा सकता है। भारत में दुनिया के लोगों का एक बड़ा हिस्सा रहता है, अगर इस हिस्से को अच्छी और गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा मिल पाये तो हम दुनियां में काफी आगे जा सकते हैं। विगत वर्षों में हमारी सरकारों का ध्यान इस ओर गया भी है। विद्यालयों में संसाधन बढ़े हैं। समाज के कई लोग भी आगे आ रहे हैं। सभी लोग लगे रहे तो परिवर्तन जरूर आएगा।

**सवाल : अपने ब्लॉक में शिक्षा व शिक्षकों की बेहतरी के लिए आपके पास क्या कोई त्वरित पक्की योजना है जिसे आप आने वाले समय में लागू करने वाले हों? क्या रणनीति होगी आपकी?**

**जवाब :** मेरा मानना है कि हमें शिक्षकों को काफी motivated रखना होगा। उनको यह समझाना बहुत ज़रूरी है कि जो काम वो कर रहे हैं वह बहुत महत्वपूर्ण है। उनको कई क्षेत्रों में दक्ष करना है। उनकी मांग के अनुरूप उनके प्रशिक्षण होने चाहिए। जैसे अंग्रेज़ी सिखाना। कक्षा में अंग्रेज़ी कैसे पढ़ाई जाये। हम अलग–अलग स्तरों पर प्रयास कर रहे हैं। अत्याधुनिक तरीके शिक्षकों को बताने होंगे।